रात्रि क्लास 25 24-4-68 ओमशान्ति "शिव बाबा याद है?"

स्थानी म्युज़ियम दिल से जचता नहीं है। अक्षर ऐसी लिखनी चाहिए फिर से 5000 वर्ष बाद स्थानी नोलेज बच्चों को मिल रहा है। फिर गुम हो जाती है। तो समझे कि बाप ही पढ़ा रहे हैं। कृष्ण तो दैवी गुणों वाला मनुष्य हो गया। निराकार भगवान कैसे पढ़ाते हैं यह पूछने का कारण मिलेगा। उनको कहा ही जाता है निराकार। जिसका अर्थ नहीं है उसको भक्ति मार्ग में याद करते हैं। परमपिता परमात्मा पतित-पावन को याद करते हैं। कृष्ण को तो पतित पावन नहीं कहते। अगर कृष्ण का कहे तो राम का नाम न लेवे। अन्धश्रधा से सीखा जाते हैं। ज्ञान तो है नहीं। भक्ति है। भक्ति के लिए ज्ञान है, ऐसे नहीं कि राजाई के लिए ज्ञान है। भल पाठशाला लिखते हैं। गीता को पाठशाला कहेंगे। मंदिर में जावेंगे तो पाठशाला नहीं कहेंगे। गीता पाठशाला कहते हैं। वेद-उपनिषद आद को पाठशाला नहीं कहेंगे। पाठशाला में एमआबजेक्ट होती है। फलाना दर्जा मिलेगा। यह भी ऐसी है पाठशाला। बाप बैठ पढ़ाते हैं। किसका पाठ? राजयोग का पाठ पढ़ाते हैं। बाप जो ज्ञान देते हैं वह प्रायः लोप हो जावेगा। इनको (ल०ना०) को भी यह ज्ञान नहीं है। तुमको अभी ज्ञान मिलता है यह बनने के लिए। पद पा लिया फिर ज्ञान की दरकार नहीं। बाकी माया के लिए पढ़ते हैं। इस दुनिया की हिस्ट्री जागरफी कोई नहीं जानते हैं। तो बाप सिध कर बतलाते हैं भक्ति-मार्ग में ज्ञान है ही नहीं। जानने लायक कोई चीज़ नहीं। जानने से मनुष्य उच्च पद पाते हैं। बाप आकर स्वर्ग का वर्सा देते हैं। वहां पवित्र रहते हैं। तो पवित्र जरूर बनना पड़े। तुम्हारी लड़ाई है 5 विकारों से रावण से। बड़ा झगड़ा काम पर चलता है। शुरू में भी कहते थे ज्ञान-अमृत पीने जाते हैं। बाप ही कहते थे अमृत छोड़ विष काहे को खाते हो। विष खाने वाले को विषस विकारी कहा जाता है। अक्षर तो है ना। अर्थ भी है। वायसलेस दुनिया। यह है निर्विकारी दुनिया के मालिक। विकारी किसको, निर्विकारी किसको कहा जाता है मनुष्य जानते ही नहीं। तुम ब्राहमण ही समझते हो। गांव2 में प्रोजेक्टर ले जाकर समझाने से चित्र ले जाना अच्छा है। प्रोजेक्टर पर समझाने से ज्ञान का इतनाप्रभाव नहीं पड़ता है। कहां लाईट हो न भी हो। प्रोजेक्टर तो काम दे न सके। जिनको भी फ्रीडम है तो घर2 में 6-8 चित्र मुख्य होनी चाहिए। सीढ़ी का, त्रिमूर्ति का, गीता का भगवान कौन? । 6 चित्र काफी है। 6 चित्र दाम तो नहीं खाते हैं। जो अच्छे सर्विस एबुल बच्चे हैं, तो हर एक के घर2 में म्युज़ियम होना चाहिए। प्रोजेक्टर से इतना अच्छा नहीं देखने में आता। पढ़ भी न सके। चित्र तो पढ़ सकेंगे। अच्छी रीत समझ में आवेगा। इसीलिए चित्र सब से अच्छे हैं। ग़रीब भी रख सकते हैं। हर एक जो भी चाहते हैं किसको समझा दें। मेहमान आकर घर में रहते हैं, मित्र-सम्बन्धी आद आते हैं तो बहुत सर्विस कर सकते हैं। बान्धेलो है ज्ञान तो है ना। जितना हो सके घर में ही ज्ञान गंगा। तुम हो ज्ञान गंगाएं। जो भी आवे उनको तुम समझावेंगे। तो सर्विस की वृधि होगी। इसमें लज्जा की बात नहीं। जंगली जनावर है कुछ भी समझ नहीं हैं। बाप को ही नहीं जानते उनको महान मूर्ख कहा जाता है। बाप द्वारा ही जाना जाता है। बच्चे दिन प्रति दिन वृधि को पाते जाते हैं। ब्राहमणियों को पूछना चाहिए तुम घर में चित्र रख सकते हो। मित्र-सम्बन्धी आते बहुत हैं। तो घर में चित्रशाला बनाना चाहिए। मंदिर तो छोटे होते हैं। कोठरी बनाते हैं। यह चित्र जास्ती जगह नहीं लेती है। समझाना है बाप यह वर्सा देते हैं। बाप भारत में ही आते हैं। भारत जब स्वर्ग था तो और कोई धर्म था नहीं। बाप आते हैं एक धर्म की स्थापना करने जब जबकि अनेक धर्म है। वह एक धर्म है नहीं। बच्चों को हिम्मत चाहिए किस प्रकार रहम करना चाहिए। अंधों की लाठी कन बाप का परिचय देवें। पैगम्बर मैसेन्जर बनें। बहुतों का तुम कल्याण कर सकते हो। अभी थोड़े सेन्टर्स हैं। आगे चल कर घर2 में भी चित्र होंगे। वह है चित्र भक्ति-मार्ग के। यह है ज्ञान मार्ग के। तुम भेट कर समझा सकते हो। वह झूठे चित्र कोई काम के नहीं। भक्ति मार्ग के चित्र भी रख सकते हो ज्ञान मार्ग के भी रख सकते हो भेट सिध करने लिए। सीढ़ी कितनी सहज है। 84 जन्मों की कहानी समझानी है। जिस ने पूरे 84 जन्म लिया

है। वही जानती सुनने के खवाई स रखेंगे। 80-8। जन्म लेने वाले पूरा इतनी खवाई स न रखेंगे। ऊंच ते ऊंच बाप जो पढ़ाते हैं ऊंच ते ऊंच बनाने लिए। हम भी वही पढ़ते हैं। और सभी बातें भूल यह बात समझानी है। यह ईश्वरीय पाठशाला ईश्वरीय युनिवर्सिटी हुई। युनिवर्सिटी माना ही मु युनिवर्स। यह खेल कैसे फिरते हैं इसकी नालेज तुमको मिलती है। तो यह है रूहानी युनिवर्सिटी। परमपिता परमात्मा समझाते हैं आत्माओं को।

यहां आये हो टीचर बन जाने लिए। तुम हर एक ब्राह्मण को टीचर बनना चाहिए। टीचर अच्छा नहीं पढ़ाते हैं तो कहते हैं टीचर इजाम है। होशियार टीचर बनना चाहिए। यहां बैठे हो सेकण्ड में चक्र याद आता है। झाड़ याद आता है। पहले2 है सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग। यह दिल में है। झाड़ सामने खड़ा है। बीज और झाड़। कैसे वृधि को पाता है यह मालूम पड़ जाता है। बच्चों के दिल में सारा चक्र याद है। तुम ही चक्रधारी बन जाते हो। हद की नालेज और बेहद की नालेज दोनो चाहिए। गृहस्थव्यवहार में कमल फूल समान पवित्र बन यह नालेज भी देते रहो। वह भी पढ़ते रहो। वह भी समय आवेगा और सभी क्लास बन्द हो जावेंगे। सिर्फ यह एक जाकर रहेगा। टाईम ही न होगा तो पढ़ कर क्या करेंगे। विनाश सामने खड़ा होगा तो अटेन्शन इस तरफ आ जावेगा। बच्चों को समझाया है हठयोग जो करते हैं ऐसे नहीं कि उनको बाप और सृष्टि चक्र बुधि में है। नहीं। बच्चे जानते हैं हम पहले पवित्र प्रवृति मार्ग में थे फिर 84 जन्म लेते2 अपवित्र बने हैं फिर 2। जन्म लिया सुखपवित्र दुनिया में जावेंगे। संगम युग पर पवित्र बनना है। पुरूषोत्तम बनना है। इस सहन को करना ही पड़ेगा। अच्छा बच्चों को गुडनाईट। नमस्ते।

रही हुई पायन्ट्स:- (28-4-68 प्रातः) इस समय सारी दुनिया पतित है। बाबा समझाते हैं अब इनका भी यह हाल। यह फर्स्ट क्लास पावन था। फिर 84 लेते2 पतित बनना पड़ता है। अभी एक मिला है तो सर्व की सद्गति हो जाती है। भक्त ही आते हैं। सभी भक्त ही है ना। भगवान भक्तों को आकर उठाते हैं। भगवान पढ़ा कर जरूर भगवान भगवती ही बनावेंगे। परन्तु कहते हैं कोई भी मनुष्य को भगवान नहीं भगवती नहीं कहा जाता। यह देवी गुणों वाले मनुष्य हैं। इनको देवता कहा जाता है। जो 84 जन्म ले फिर अन्त में आकर आसुरी गुणों वाले बन जाते हैं। फिर अभी मैं तुमको देवी गुणों वाला बनाता हूं। यह युनिवर्सिटी या कालेज है। दर्शन की कोई बात नहीं। पढ़ाने वाले से पढ़ना है। टीचर से पढ़ना होता है ना दर्शन आदि यहां है नहीं। दर्शन आदि करना होता है सन्यासियों को। मनुष्य समझते हैं देवताओं के दर्शन होने से हम देवता बन जावेंगे। अच्छा फिर हनुमान का दर्शन करने से हनुमान बन जावेंगे। भक्ति मार्ग में कितने ढेर के ढेर चित्र हैं। कृष्ण को भी काला बना दिया है। इसमें दिखाया है कालीदुनिया नर्क को लात मार रहे हैं। तुमने लात मारी है ना। अभी यह कहते हैं मैं आ रहा हूं। श्रीकृष्ण में सभी का प्यार रहता है। ज्ञान के बाद भक्ति भक्ति के बाद है ज्ञान। ज्ञान वाले फिर भक्ति में जरूर आ जाते हैं। पहले भक्ति भी तुम शुरू करते हो। फिर ज्ञान में भी पहले तुम आते हो। हिसाब है ना। ओम।

तुम ब्राह्मणों को कहा जाता है स्वदर्शनचक्रधारी। क्या कोई सुने तो स्वदर्शनचक्रधारी भव तो कहेंगे यह कहां की भाषा है। स्वदर्शनचक्रधारी तो विष्णु था। जरूर मुंझेंगे। इसलिए नये को पहले अलफ से समझाना पड़ता है। पहले तो समझाना है मनुष्य मात्र के दो बाप हैं। यह पारलौकिक बेहद के बाप का वर्सा है ना। शिव बाबा जब आये थे तो यह स्वर्ग का वर्सा दिया था। तुम जानते हो कल की बात है। भारत विश्व का मालिक था। इसमें मुख्य है पवित्रता की बात। कहते हैं यह भाई बहन बनाते हैं। अभी तो बाबा उन से भी ऊपर ले जाते हैं। भाई2 समझो। यही डिफिकल्ट सबजेक्ट है। बाप कहते हैं मैं आत्माओं को पढ़ाता हूं। आत्माओं को ही देखता हूं। सकाश देता हूं अपने को भी अशरीर दूसरों को भी अशरीर देखना है। ऐसे देखते2 शरीर को भी भूल जावेंगे। यह अशरीरी होने की प्रैक्टीस पर जावेंगे। तुम हल्के होते जावेंगे। बाप तो युक्तियां बताते हैं। ओम।